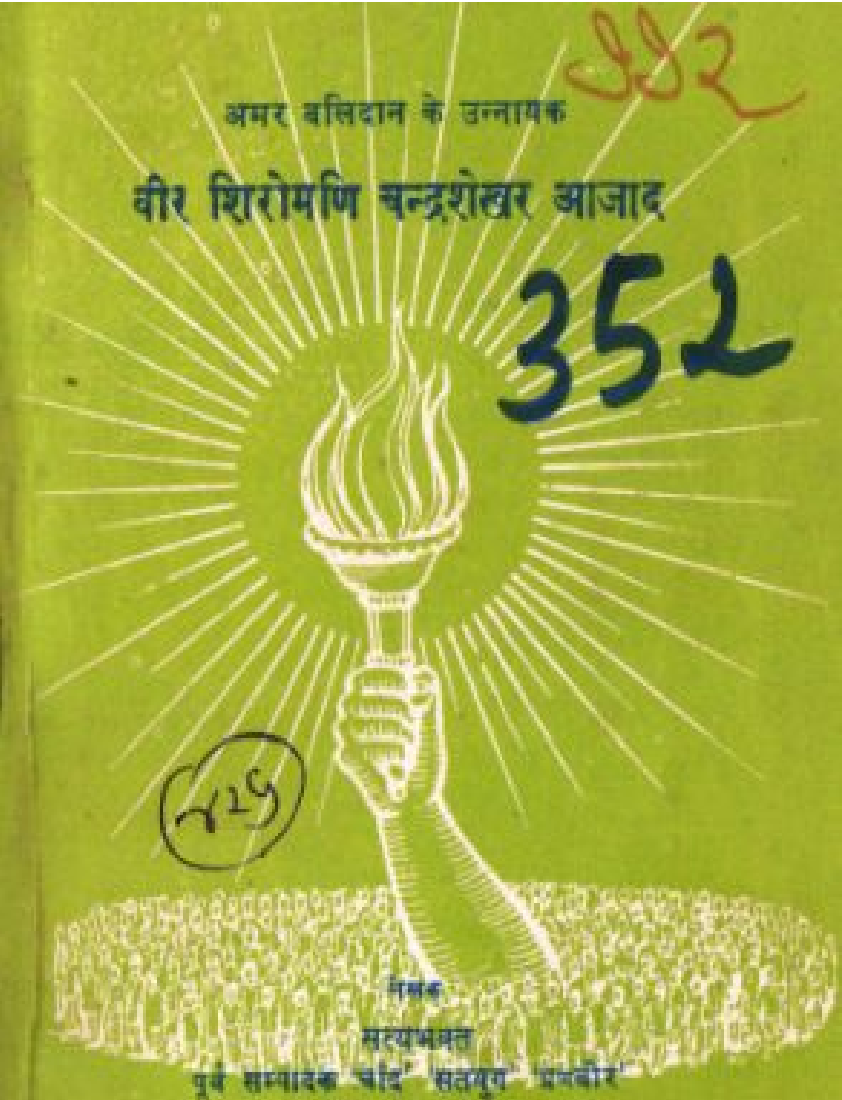
अमर बलिदान के उन्नायक

वीर शिरोमणि चन्द्रशेखर आजाद



लेखक
सत्यभक्त
पूर्व सम्पादक 'चाँद' 'सतयुग' 'समवीर'

युग-निर्माण-योजना, मथुरा

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI CHANDUBHAI PATEL,
GONDAL, GUJARAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अमर बलिदान के उन्नायक वीर-शिरोमणि

चन्द्रशेखर आजाद

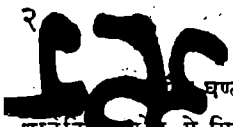


सन् १९३१ के फरवरी महीने की सत्ताईसवीं तारीख थी। सुबह के आठ बजे के लगभग दो युवक इलाहाबाद के एलफ्रेड पार्क में टहल रहे थे और आपस में क्रान्तिकारी दल की तत्कालीन परिस्थिति पर विचार विमर्श करते जाते थे। उन दिनों दल के एक महत्वपूर्ण सदस्य कैलाशपति ने दिल्ली पुलिस को क्रान्तिकारियों की सभी नई पुरानी योजनाओं का रहस्य प्रकट कर दिया था और छोटे-बड़े अधिकांश सदस्यों का पता भी बतला दिया था। इससे तीन-चार महीने के भीतर एक-एक करके कई सदस्य पकड़े या मारे जा चुके थे और बचे हुए व्यक्तियों की खोज पुलिस बड़ी सरगर्मी से कर रही थी। ऐसी परिस्थिति में उनकी रक्षा के लिए क्या उपाय किया जाय इस पर चर्चा की जा रही थी। एक सुझाव यह था कि कुछ लोग बर्मा के रास्ते चीन या रूस चले जायें और वहीं से क्रान्तिकारी आन्दोलन में सहयोग देते रहें।

इन दोनों युवकों में से एक "हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातन्त्र सेना" के सेनापति चन्द्रशेखर आजाद थे और दूसरा उनके एक सहयोगी श्री सुखदेव राज। चन्द्रशेखर पिछले साढ़े छै वर्षों से फरार थे, उन पर कितनी ही भयंकर वारदातों के लिये वारन्ट जारी थे और गिरफ्तारी के लिए पाँच हजार के इनाम की घोषणा करदी गई थी। यह निश्चय था कि पकड़े जाने पर उन्हें मृत्युदण्ड दिया जाएगा, पर इधर आजाद ने भी प्रतिज्ञा कर रखी थी कि कोई पुलिस वाला मेरे जीवित शरीर को हाथ नहीं लगा सकता और न मुझे जेल-खाने में बन्द किया जा सकता है। मैं "आजाद" हूं तो सदा आजाद रह कर ही दिखला दूँगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



घण्टा तक इस तरह पार्क का चक्कर लगाने के पश्चात् वे थानेदार से मिले हुये भाग में एक पेड़ के नीचे बैठ गए और क्रान्तिदल की वर्तमान समस्याओं पर विचार करने लगे। उसी समय एक पुलिस अफसर—ठाकुर विश्वेश्वर सिंह ने उनको देखा और अनुमान किया कि यह कदाचित् चन्द्रशेखर आजाद हैं! उसने तुरन्त पार्क की बगल में ही रहने वाले सी. आई. डी. के सुपरिण्टेण्डेण्ट नाट बाबर को खबर दी। वह अपनी मोटर पर बैठकर उस जगह पहुँचा जहाँ आजाद और सुखदेव राज बैठे बातें कर रहे थे। पार्क के भीतर होते हुए भी यह एक जंगल जैसा स्थान था, जहाँ अनेक पेड़ बेतरतीब उगे हुए थे और पास में ही एक छोटा-सा नाला बरसाती पानी के लिये बना हुआ था। नाट बाबर मोटर से उतर कर सीधा आजाद की तरफ चला। उसने अपनी पिस्तौल निकाल ली और पूछा—"तुम लोग कौन हो।"

परिस्थिति को समझकर आजाद ने भी तुरन्त ही अपनी भरी हुई पिस्तौल निकाली और दोनों तरफ की गोलियाँ एक साथ छूटीं। नाट बाबर की गोली आजाद की जांघ में और आजाद की गोली नाट बाबर के दाहिने हाथ में लगी जिससे उसकी पिस्तौल छूट कर गिर पड़ी। नाट बाबर भाग कर एक पेड़ के पीछे खड़ा हो गया और आजाद भी सुखदेव राज के साथ दूसरे पेड़ की ओट में चले गये। उन्होंने सुखदेव राज को तो वहाँ से बचकर चले जाने को कह दिया और स्वयं उस घायल अवस्था में ही पुलिस वालों से युद्ध करने लगे। ठाकुर विश्वेश्वर सिंह ने दूर से बन्दूक चलाकर उनको गोली मारी तो आजाद ने पड़े-पड़े पिस्तौल से ही ऐसा निशाना लगाया कि आक्रमणकारी का जबड़ा टूट गया। आजाद की इस अचूक निशानेबाजी की उनके शत्रुओं ने भी जी खोलकर प्रशंसा की।

पर जब आजाद ने देखा कि वे चारों तरफ पुलिस वालों से घिरे हैं और घायल होने के कारण चल भी नहीं सकते तो अपने पिस्तौल की अंतिम गोली उन्होंने अपनी कनपटी में मारली। एक महान् देशभक्त और वीरात्मा ने इस खुले संग्राम में शत्रुओं से जूझते हुए वीरगति पाई। आजाद का नाम सदा के लिए अमर हो गया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आरम्भिक जीवन—

चन्द्रशेखर आजाद के पिता भी सीताराम तिवारी उन्नाव (उ० प्र०) के बदरका गाँव के निवासी थे पर, जीविका के लिये झबुआ (मध्य भारत) के भाँवरा नामक स्थान में जा बसे थे। वहीं पर २३ जुलाई सन् १९०६ को आजाद का जन्म हुआ। बचपन में घर की गरीबी के कारण उनकी शिक्षा बहुत कम हो सकी। अपने पिता के कठोर व्यवहार से असन्तुष्ट होकर १२-१३ वर्ष की अवस्था में ही ये बम्बई भाग गये और कुछ महीने मजदूरी करके अपना निर्वाह किया। फिर संस्कृत पढ़ने की मन में आई तो काशी जाकर एक पाठशाला में भरती हो गये जहाँ विद्यार्थियों की पढ़ाई और भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती थी। जब सन् १९२१ में महात्मा गाँधी के असहयोग आन्दोलन ने जोर पकड़ा और सरकारी स्कूलों के बायकाट की घोषणा हुई तो बहुसंख्यक लड़के पढ़ना-लिखना छोड़कर काँग्रेसी-स्वयं सेवक बन गये। आजाद भी अपनी उत्साही और निर्भीक प्रकृति के कारण उस दल में शामिल हो गये। प्रसिद्ध क्रांतिकारी लेखक मन्मथनाथ गुप्त और श्री रघुनाथसिंह (बाद को एम. पी.) भी इनके साथियों में थे। ये सभी १५ वर्ष से कुछ कम आयु के थे।

जब हड़ताल और जलूस के सम्बन्ध में वे गिरफ्तार किये गये तो मजिस्ट्रेट की अदालत में अंग्रेजी सरकार की अवहेलना के भाव से उन्होंने अपना नाम "आजाद" पिता का "स्वाधीन" और घर "जेलखाना" बताया। इससे गुस्सा होकर मजिस्ट्रेट ने उनको १५ बेंतों की सजा दी। उन बेंतों को खाकर आजाद सदा के लिये सरकार के पक्के दुश्मन बन गये।

क्रांतिकारी दल के नेता—

असहयोग आन्दोलन से भी कई वर्ष पहले बनारस में क्रांतिकारी दल की गतिविधियाँ चलती रहती थीं। उसके प्रधान नेता शचीन्द्रनाथ सान्याल थे जिनको सन् १९१६ में काले पानी का दण्ड दिया गया था। जब आजाद बेंत खाकर काशी विद्यापीठ में दाखिल हो गये तो वहाँ उनका परिचय श्री मन्मथनाथ गुप्त और प्रणवेश चटर्जी से हुआ। वे दोनों क्रांतिकारी दल से परिचित और सम्बन्धित थे। इन्हीं के द्वारा आजाद का परिचय पहले बनारस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के क्रांतिकारी राजेन्द्र लाहिड़ी आदि और फिर रामप्रसाद बिस्मिल से हो गया। राम प्रसाद शीघ्र ही आजाद की बहादुरी और सूझ-बूझ के कायल हो गये और दल में उनका एक महत्वपूर्ण स्थान बन गया। काम करने में उनकी तेजी को देखकर उनका गुप्त नाम "क्विइक सिल्बर" (पारा) रख दिया गया।

यद्यपि आरम्भ में आजाद ने क्रांतिकारी पर्चे बाँटने में भी अच्छा कार्य-किया, पर उनका नाम विशेष रूप से तब प्रसिद्ध हुआ जब काकोरी रेलवे डकैती के सब अभियुक्तों के पकड़ लिये जाने पर भी वे फरार हो गये। उनकी गिरफ्तारी के लिये दो हजार के इनाम की घोषणा की गई। पर बड़े-बड़े चतुर गुप्तचर पूरा प्रयत्न करने पर भी उनका पता न लगा सके। इस रहस्य का वर्णन करते हुये मन्मथनाथ गुप्त ने लिखा है—"आजाद कहाँ डुबकी लगा गये, यह या तो वही जानते थे या ईश्वर। आजाद में यह गुण था कि मौके पर वह अकेला कदम उठा सकते थे और निर्णयात्मक रूप से उठा सकते थे। इसी कारण वह रेकार्ड समय तक पुलिस के चंगुल से बचते रहे।"

आजाद अपने नाम वारंट और इनाम होने पर भी सक्रिय बने रहे। इतना ही नहीं उन्होंने छिन्न-भिन्न क्रांतिकारी दल के पुनर्गठन का काम भी आरम्भ किया और झाँसी में जहाँ वे गुप्त रूप से निवास करने लगे थे, अनेक नव युवकों को दल में भरती करके एक महत्वपूर्ण केन्द्र स्थापित कर दिया। इन नवयुवकों में से भगवान दास माहौर, सदाशिवराव मलकापुरकर, विश्वनाथ वैशम्पायन आदि आगे चल कर दल के प्रसिद्ध और सुदृढ़ कार्यकर्त्ता निकले। यद्यपि हम इस सम्बन्ध में बहुत छान-बीन तो नहीं कर सके पर अनेक क्रान्तिकारियों के लिखे वर्णन को पढ़ कर यही जान पड़ता है कि जिन लोगों को आजाद ने दीक्षित किया और ट्रेनिंग दी उनमें से शायद ही कोई अविश्वस्त सिद्ध हुआ होगा, इसके विपरीत पंजाब तथा दिल्ली की ...फ के सदस्य बड़ी संख्या में इकबाली गवाह ही नहीं बने वरन् उनमें से "बड़े" कहलाने वालों ने भी प्रायः चालाकी से काम लिया और कमजोरी भी दिखाई।

झाँसी में सबसे पहले वे मास्टर रुद्रनारायण के यहाँ ठहरे। मास्टर साहब भी रामप्रसाद बिस्मिल के दल से सम्बन्ध रखते थे और एक बार शाहजहाँपुर में आजाद से परिचित हो चुके थे। यद्यपि उन्होंने आजाद को भाई के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



समान घर में रखा और अपनी स्त्री का पर्दा करने का नियम भी उनके लिये हटा दिया। पर वे उनका वहाँ रहना खतरनाक समझते थे। उन पर सरकारी अधिकारियों के सन्देह था और इस लिये पुलिस का एक गुप्तचर उनके घर के सामने प्रायः बैठा रहता था। इससे सुरक्षा के ख्याल से उन्होंने झांसी से कुछ मील के फासले पर ढिमरपुरा गाँव में, जो ओरछा रियासत में पड़ता था, उनके रहने की व्यवस्था की। वहाँ हनुमानजी के मन्दिर में वे एक साधु के भेष में रहते थे और उनका नाम हरिशंकर ब्रह्मचारी प्रसिद्ध हो गया था।

हरिशंकर बीच-बीच में झाँसी भी आ जाते थे, और उनके मित्र भी कभी ढिमरपुरा पहुँच जाते थे। इस बीच एक ऐसी घटना हो गई जो काफी खतरनाक थी, पर आजाद अपनी सूझ-बूझ के बल पर उससे सहज में छुटकारा पा गये। एक दिन वे किसी अन्य साधु के साथ झांसी से वापस लौट रहे थे कि शहर के बाहर पुलिस के दो सिपाहियों को उन पर सन्देह हो गया और वे उनके पास आकर पूछने लगे "क्या तू आजाद है ?" आजाद ने तुरन्त हँसते हुए कहा-'हैं-हैं, बच्चा हम तो आजाद ही हैं ! साधुओं को क्या बंधन है बाबा! महावीरजी के भक्त हैं, भजन करते हैं और मस्त रहते हैं। तो चलें बच्चा ! हनुमानजी को चोला चढ़ाने में देर हो जायेगी।" पर पुलिस वाले उनको थाने ले जाने की जिद करने लगे। कुछ दूर तक तो आजाद उनके साथ चलते-चलते उन्हें समझाते रहे, पर जब देखा कि ये तो मानते ही नहीं, तो दृढ़ता से बोले- "तुम्हारे थाने के दरोगा से हनुमानजी बड़े हैं। मैं तो हनुमानजी का हुक्म मानूँगा, तुम मानों अपने दरोगा-फरोगा को।" यह कह कर अपने रास्ते पर तेजी से चल दिये और सिपाही देखते ही रह गये।

चरित्र सम्बन्धी दृढ़ता—

ढिमरपुरा में ही एक ऐसी घटना हो गई जिससे आजाद की चरित्र सम्बन्धी दृढ़ता की छाप सभी परिचित व्यक्तियों पर पड़ गई। जिन ठाकुर मलखानसिंह के मकान में ये कुछ समय बाद रहने लगे थे, उनकी एक बहिन भी उसी में रहती थी, जिसे आजाद और उनके साथी जीजी कहकर पुकारते थे। किसी समय उसकी एक सहेली विवाह का निमन्त्रण देने वहाँ आई। वह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आजाद के स्वास्थ्य और शरीर सङ्गठन को देखकर आसक्त हो गई और मौका पाकर रात के समय अकेली इनके पास आकर चारपाई पर बैठ गई। आजाद चौंक कर खड़े हो गये और इस प्रकार के व्यवहार के लिए उसे डांटने लगे। पर जब वह न मानी और इनके पास रहने की हठ करने लगी तो ये सीढ़ी के दर्वाजे की तरफ गये। उसको जब बाहर से बन्द देखा तो वे छत से नीचे कूद पड़े और हनुमानजी के मन्दिर में जाकर सो गये। इसके पश्चात् सुबह वे मलखान सिंह के मकान पर गए और वहां चौपाल पर नियमित रूप से लड़कों को पढ़ाया, पर जब तक वह स्त्री वहाँ ठहरी रही वे भीतर नहीं घुसे और भोजन भी बाहर ही किया। अन्त में लज्जित होकर उस स्त्री ने इनसे अपनी गलती के लिए क्षमा प्रार्थना की और तब से ठाकुर तथा अन्य लोगों की दृष्टिमें इनकी श्रेष्ठता और प्रामाणिकता और भी बढ़ गई।

आजाद केवल किसी धार्मिक या नैतिक आदर्श को ध्यान में रखकर ही स्त्रियों के सम्पर्क से दूर नहीं रहते थे, वरन् वे इसको क्रांतिकारी दल की सुदृढ़ता और सुरक्षा का एक मुख्य नियम मानते थे। इसमें सन्देह नहीं कि रमणी का प्रेम और वह भी अवैध-ढङ्ग का, मनुष्य में कमजोरियाँ अथवा कई प्रकार के दुर्गुण उत्पन्न कर देता है। उच्चकोटि के क्रांतिकारी इस सम्बन्ध में पूर्ण संयम से काम लेते आये हैं। रूस के क्रांतिकारी अपनी वास्तविकता को छिपाने के लिये दल की किसी सदस्या को अपनी पत्नी बतलाकर गृहस्थ जीवन का अभिनय किया करते थे। लेनिन और क्रुप्सकाया बरसों तक ऐसे ही दिखावटी पति-पत्नी बन कर रहे थे, पर उन्होंने कभी यौन-सम्बन्ध की बात नहीं सोची। लेनिन यही विचार करता था कि "यदि मैं ऐसी चेष्टा करूँगा तो क्रुप्सकाया समझेगी कि मैं परिस्थिति का अनुचित लाभ उठा रहा हूँ।" बहुत वर्षों तक साथ रहते-रहते जब दोनों ने एक दूसरे के मन की भावना समझ ली तब कहीं जाकर उनमें दाम्पत्य-सम्बन्ध स्थापित हुआ।

पर हमारे यहाँ के क्रांतिकारी दल के सदस्यों ने इस सम्बन्ध में कोई अच्छा उदाहरण उपस्थित नहीं किया। यशपाल और प्रकाशवती तथा कैलाशपति और चन्द्रावती का सम्बन्ध दल के लिये हानि का कारण बना। वीरभद्र

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



यद्यपि विवाहित था पर उस पर भी कुछ इसी प्रकार का आरोप लगाया गया था। काकोरी-केस के बनबारीलाल से भी यही शिकायत थी। भोग की लालसा मनोबल को क्षीण कर देती है।

आजाद इस विषय में बहुत सख्त थे और अनुशासन की दृष्टि से उन्होंने यशपाल को प्राण दण्ड देने का निर्णय किया था। कैलाशपति ने तो इस सम्बन्ध में बड़ी नीचता का परिचय दिया और पुलिस के सामने क्रांतिकारी दल के समस्त रहस्यों का ऐसा भण्डाफोड़ किया कि पूरा सङ्गठन छिन्न-भिन्न होगया और अधिकाँश सदस्य गिरफ्तार कर लिये गये। इस सम्बन्ध में उनके चरित्र लेखक वैशम्पायन ने लिखा है—

"आजाद का सबसे बड़ा सम्बल था उनका चरित्र। इसको उन्होंने सदा महत्व दिया और इस धारणा पर जीवन के अन्त तक दृढ़ रहे। चरित्रहीन व्यक्ति से वे सदा घृणा करते। कुछ साथियों ने उनके इस गुणकी हँसी उड़ाई। पर वे अपने सिद्धांत पर अटल रहे। विवाह उनकी दृष्टिमें पाप नहीं था,परंतु जब नारी दल के किसी सदस्य के कर्तव्य में बाधक होती दिखाई दी, अथवा किसी सदस्य ने दल की सदस्यता को विवाह का साधन बनाया और उसके लिये दल का दुरुपयोग किया, तो ऐसे सदस्यों को आजाद कड़ी से कड़ी सजा देने में न हिचके। उनके इस महान गुण की कुछ स्वार्थी तत्वों ने खिल्ली उड़ाई, उसे आजाद की भूल बतलाया परन्तु उनका यह प्रयत्न अपने अवगुण छिपाने का प्रयास मात्र था। पार्टी के अनेक सदस्य विवाहित थे और आजाद की उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा थी। भाई भगवती चरण भी विवाहित थे। आजाद उन्हें बहुत मानते थे। उनसे परामर्श लिये बिना कोई योजना कार्यान्वित नहीं करते थे। परन्तु जिन लोगों ने प्रगतिशीलता के नाम पर दल को अपनी प्रेम-लीला का साधन बनाना चाहा उनको आजाद ने कभी क्षमा नहीं किया।"

निस्संदेह चरित्र मनुष्य की श्रेष्ठता का बहुत बड़ा प्रमाण है। इसका सम्बन्ध केवल नारी से ही नहीं है, वरन् सचाई, ईमानदारी, नैतिकता आदि भी चरित्र के ही अंग हैं। चरित्रहीन व्यक्ति का सभी दृष्टियों से पतन हो जाता है। ऐसे व्यक्ति यदि विद्वान तथा प्रतिभाशाली हों और साँसारिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सफलताएँ भी प्राप्त कर लें, तब भी विचारशील और निष्पक्ष व्यक्ति उनको सम्मान की दृष्टि से नहीं देख सकते ।

अन्याय का विरोध–

आजाद स्वभाव से ही अन्याय और जोर-जुल्म के विरोधी थे । स्वयं खतरा उठाकर भी वे अन्याय पीड़ितों का पक्ष लेते थे और दुष्ट लोगों से भिड़ जाते थे । इस बात के उदाहरण उनके क्रांतिकारी जीवन में ही नहीं मिलते, वरन् जब काशी में वे किसी संस्कृत पाठशाला के सामान्य विद्यार्थी थे तब भी यह विशेषता उनमें देखी जाती थी । वहाँ एक गुण्डा राह चलती बहू-बेटियों को छेड़ा करता था वह पुलिस से भी मिला रहता था,इसलिए लोग उससे डरते थे और उसकी जोर जबर्दस्ती सहन करते रहते थे । एक दिन उसने बाजार में एक युवती को छेड़ा और उसका हाथ पकड़ लिया । आजाद ने, जो उसी मार्ग से जा रहे थे यह दृश्य को देखकर गुण्डे को डाँटा । वह हँसकर कहने लगा— "अपने रास्ते चला जा, एक रैपट (तमाचा) मारूँगा, तो बत्तीसों दाँत झड़ जायेंगे ।" आजाद यद्यपि उस समय लड़के ही थे, पर संयम तथा व्यायाम की बदौलत उनका शरीर काफी तगड़ा हो गया था । साहस तो उनके स्वभाव में सदा से ही था । बस उन्होंने गुण्डे को ललकारा और जैसे ही वह इनकी ओर बढ़ा, उसे उठाकर जमीन पर दे मारा । वे उसकी छाती पर चढ़ बैठे और कहा कि "जब तक उस युवती को बहिन कहकर न पुकारेगा तब तक नहीं हटूँगा ।" अन्त में उसे ऐसा ही करना पड़ा । उस दिन से उसका स्त्रियों को छेड़ना बन्द होगया ।

ऐसी ही दो-एक घटनायें झांसी में उन दिनों भी हुई, जब वे ढिमर-पुरा को छोड़कर, श्री रामानन्द के पास रहकर मोटर ड्राइवरी की शिक्षा ग्रहण कर रहे थे । रामानन्द के कारखाने के पास ही रामदयाल ढीमर रहता था,जो मास्टर रुद्रनारायण के यहां ड्राइवरी का काम करता था । वैसे तो वह दुष्ट या बदमाश नहीं था, पर शराब पीकर प्रायः अपनी स्त्री को पीटा करता था । रात को उसका रोना चिल्लाना सुनकर आजाद को बड़ा बुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लगता था और पड़ौस के अन्य लोग भी उससे नाराज रहते थे। एक दिन सुबह वह टट्टी जाने के लिये निकला कि आजाद उससे मिल गये। उन्होंने उसे समझाया "भाई, तू बड़ा भला आदमी है, पर फिर भी शराब पीकर अपनी स्त्री पर ऐसा अत्याचार क्यों करता है ?" रामदयाल को अपने घरेलू मामलों में किसी का हस्तक्षेप बड़ा बुरा लगा और गुस्से से बोला—"हरीशंकर, मैं अपनी घरवाली को पीटता हूं। मैं चाहूं तो उसे जान से मार डालूँ,तुम्हारी वह क्या लगती है, जो उसकी तरफदारी कर रहे हो ?"

आजाद को ऐसी बातें कहाँ सहन हो सकती थीं। वे क्रोधित होकर कहने लगे—"अच्छा, आज रात को मारके देख, अगर उसी समय तेरा नशा न उतार दूँ तो कहना।"

"अजी रात ही क्यों, और नशे की ऐसी-तैसी, अभी होश में है उसको तुम्हारे सामने यहीं सड़क पर मारता हूँ, देखूँ कौन क्या करता है ?" यह कह कर वह घर में से अपनी स्त्री को बाल पकड़कर घसीट लाया और कहने लगा—"लो इस हरामजादी को मारता हूँ, देखूं क्या करते हो ?" उसने जैसे ही मारने को हाथ उठाया कि आजाद ने उसको पकड़कर गाल पर ऐसे जोर का तमाचा मारा कि वह सिर पकड़ कर बैठ गया। हमको मालूम है कि इसके दो तीन वर्ष बाद ही कानपुर की "कच्छी डकैती" के अवसर पर वहाँ का मुनीम आजाद के एक थप्पड़ से मर ही गया था। बस रामदयाल भी एक तमाचे के असर से सीधा हो गया और उस दिन से स्त्री को पीटना बन्द कर दिया।"

उसी समय की दूसरी घटना जो वैशम्पायन ने लिखी है आजाद की गरीबों के प्रति हमदर्दी पर और भी प्रकाश डालती हैं। उनके मोहल्ले में एक धनीराम बढ़ई रहता था। एक बार वह पन्द्रह दिन तक बीमार पड़ा रहा। फिर जब उठकर काम पर जाने लगा तो, बड़े सबेरे ही एक पठान उससे अपना कर्ज वसूल करने आ पहुंचा। धनी राम ने कहा—"खान बाबा, मैं तुम्हारा रुपया जरूर लौटा दूँगा, पर अभी बीमारी से उठा हूँ, दस-पाँच दिन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ठहर जाओ।" पर खान गुस्सा होकर कहने लगा—"हम कुछ नहीं जानता। तुम सुअर का बच्चा हमारा रुपया इसी वक्त दो।"

आजाद धनीराम का घिघियाना सुनकर बाहर निकल आये। वे इन काबुली लोगों के दुर्व्यवहार से अच्छी तरह परिचित थे। उन्होंने समझाया—"खान भाई, इसे छोड़ दो। इस तरह पकड़ने से क्या फायदा। अगर वह मजदूरी पर नहीं जायेगा तो न तो तुम्हारे पैसे मिल सकेंगे और न उसके बाल-बच्चों को खाना मिलेगा।"

खान अपनी आदत के अनुसार जोर से बोला—"तुम कौन है इसका?"

आजाद—"मैं इसका हूँ तो कोई नहीं, पर यह मेरा पड़ौसी है और मैं जानता हूँ कि यह ईमानदार आदमी है।"

खान—"तुम अपना काम देखो। हम आज इससे पैसा वसूल करेगा। इसके लिए वह अपना बीबी-बच्चा बेचदे।"

यह सुनकर आजाद को क्रोध चढ़ आया। उन्होंने खान के हाथ को एक जोर का झटका देकर धनीराम को छुड़ा दिया और कहा—"देखूं, तू उसे काम पर कैसे नहीं जाने देता।"

खान बड़ा लम्बा-चौड़ा और तगड़ा था। वह आजाद को मारने को बढ़ा तो इन्होंने एक ही दाव लगा कर उसे जमीन पर ऐसा फेंका कि पगड़ी, जूता इधर-उधर जा गिरे। लोगों की भीड़ जमा हो गई और खान को बुरा भला कहने लगे। खान ने समझ लिया कि वह हार गया, इससे चुप-चाप उठ कर चला गया।

इस प्रकार आजाद स्वभाव से ही अन्याय के विरोधी और गरीबों का पक्ष लेने वाले वाले थे। अन्याय करने वाला कोई भी हो, ऐसी घटना पर उन्हें क्रोध आजाता था। एक बार झाँसी के सदर बाजार में उन्होंने कुछ गोरे सिपाहियों को उपद्रव करते, औरतों को छेड़ते और लोगों को मारते तथा गालियाँ बकते देखा। इस पर उनको बड़ा गुस्सा आया। वे भगवानदास के पास आये और अपना पिस्तौल उसको देकर कहने लगे—"ले, इसे अपने पास

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रखले। अगर गुस्से में आकर में कुछ कर बैठा तो यहां के समस्त दल वालों पर आफत आ जायगी। यों तो बदमाश और शरारती लोग कदम-कदम पर मिलते ही रहते हैं। पर आँखों के सामने बदमाशी देखकर क्रोध आजाना स्वाभाविक है, इसी से तुम्हारे पास चला आया।"

भूखे रहकर देश-सेवा—

फरार अवस्था में आजाद को केवल पुलिस के दूतों का ही खटका नहीं रहता था, वरन् निर्वाह की समस्या भी बड़ी गम्भीर हो जाती थी। बनारस में भागते समय उनके पास कुछ रुपया-पैसा तो था नहीं। किसी से रेल भाड़े आदि के लिए कुछ रुपया लेकर चल दिये। झाँसी में आरम्भ में मास्टर रुद्रनारायण के यहाँ ठहरे तो वहीं भोजन करते। पर एक साधारण गृहस्थी में सदैव उचित व्यवस्था हो सकनी कठिन है। फिर आजाद का पहलवानी शरीर, अतएव उनको अनेक बार भूखों भी रह जाना पड़ता था। फिर जब मोटर ड्राइवरी की शिक्षा प्राप्त करने लगे तब भी उनको पैसे की तङ्गी बनी रहती थी। उस समय का वर्णन करते हुए वैशम्पायन ने अपनी पुस्तक—"अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद" में लिखा है—

"जिन दिनों रामानन्द जी के साथ आजाद रेलवे लाइन की गुमटी पर रहते थे उन दिनों उन्हें भीषण आर्थिक सङ्कट का सामना करना पड़ता था। कई दिन तो केवल एक समय चबैना खाकर ही गुजारा कर लेते थे। एक बार उनके पास केवल एक आना ही बाकी था, जिससे एक दिन की भूख की समस्या हल हो सकती थी। यह भी विचार आता था कि आज यह एक आना खर्च हो गया तो कल क्या होगा? फिर भी आज भूख की ज्वलन्त समस्या का हल करना आवश्यक था। इसलिए एक आने के चने ले आये और खाने लगे। खाते-खाते आखिरी मुट्ठी जो भरी तो उसमें कुछ गोल-गोल सा लगा। मुट्ठी खोलकर देखा तो वह इकन्नी थी। आजाद ने कहा—"उस इकन्नी को देखकर मुझे हँसी आ गई यह सोचकर कि चलो कल की भी व्यवस्था हो गई। पर फिर यह ध्यान आया कि यह तो उस गरीब चने वाले की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गाढ़ी कमाई का पैसा है, उस पर मेरा कोई अधिकार नहीं।" चबैना खाकर पानी पिया और इकन्नी उस चना वाले को लौटा आये, यह कहकर कि तुमने मुझे जो चने दिए थे उसमें यह इकन्नी आगई थी। दुकानदार ने उस इकन्नी की ओर देखा और एक बार मेरी ओर देख कर मुस्करा दिया। मैं भी मुस्करा कर अपने रास्ते चल दिया।" पर कल की भूख प्रश्न चिन्ह बनी रही। और ऐसे निराहार दिवस तो उनके सङ्गी साथी ही थे। लगातार कई दिनों तक ठीक से भोजन मिलना उनके लिये अनहोनी बात थी।"

आजाद को उन दिनों सूखी रोटियों से पेट भरने में भी कितनी कठिनाई उठानी पड़ती थी, यह श्री भगवानदास माहौर के उस वर्णन से विदित होता है जो उन्होंने "यश की धरोहर" में लिखा है—

"श्री आजाद की भोजन व्यवस्था के लिए हम लोगों को घर से रोटियाँ चुरानी पड़ती थीं। भोजन मुझे माँ के हाथों चौके में बैठकर मिलना था। रोटियों के बर्तन तक तो मेरी पहुंच थी नहीं। चौके के अन्दर जो एक भीतरी चौका रहता है, उसकी रेखा तो मेरे लिये लक्ष्मण-रेखा थी। इस रेखा को लाँघ कर बर्तन में से दो-चार रोटियाँ चुरा लेने का साहस मैं नहीं कर सकता था। बस यही एक रास्ता था कि बहुत-सी रोटियाँ माँ से अपनी थाली में परोसवा लूँ, और थाली उठाकर अपने कमरे में चलदूँ। उनमें से कुछ मैं खाऊँ और कुछ आजाद के लिए बचालूं। जब मैंने ऐसा किया तो मां भयङ्कर रूप से नाराज हुई। एक रोज तो खाने को ही नहीं मिला। मगर मैं अपनी 'जिद' पर डटा रहा कि चौका में धुँआ बहुत होता है और मेरी आंखों में रोहे हैं। कालेज के डाक्टर ने धुँए से बचे रहने को कहा है। मुझे अंधा थोड़े ही होना है। खाना दो, चाहे मत दो, मैं धुँए में हर्गिज नहीं खाऊँगा।' यह तर्क भी आजाद का सिखाया हुआ था। भला कौन माँ चाहेगी कि बेटे की आँखें खराब हो जाँय।

"आजाद घर आये तो माँ ने उनसे शिकायत की। माँ को सुनाने के लिये आजाद ने भी मुझे झिड़का और चौका-विज्ञान पर एक लेक्चर दिया। जब मैं ने अपनी आँखों का तर्क पेश किया तो आजाद निरुत्तर हो गये और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कहने लगे 'अखिर आपद-धर्म भी तो होता है।' कट्टर ब्राह्मण और आदर्श बेटा हरिशंकर ने जब मान लिया तो मां के लिए तो मानों खुदा ने ही मान लिया और रोटियों की चोरी करने का मेरा मार्ग खुल गया। मुझे अधिक भूख लगती देख माँ और प्रसन्न होती । भाई सदाशिव और विश्वनाथ भी इसी प्रकार घर से रोटियां चुरा लाते। आजाद को इस प्रकार चुराई हुई रोटियों से पेट भरते देख एक बार मेरी भावुकता उमड़ी कि हम सब तो बड़े आराम से तरह-तरह का भोजन करते हैं, और आपको प्रायः नित्य ही इसी प्रकार बासी सूखी रोटियों और अचार से पेट भरना पड़ता है।' तो आजाद बोले—"अरे बेवकूफ हुआ है। तीन घर से तीन तरह की रोटियां आती हैं। किसी के यहाँ से आम का अचार, किसी के यहाँ से नीबू का। तेरे घर से करेले का अचार तो मुझे बहुत अच्छा लगता है। इतना विविध प्रकार का खाना खाता हूँ और क्या चाहिये ।"

आप इस दृश्य की तुलना आजकल के "देश भक्तों" से करें जिन्हें खाने के लिये दूध मलाई ही नहीं फलों के रस की जरूरत पड़ती है। जिनकी नित्य प्रति होने वाली दावतों में सैकड़ों रुपये के खाद्य पदार्थ रकाबियों में ही छोड़ दिये जाते हैं। और वहां देश के लिये प्राणों की बाजी लगाने वाले आजाद के लिये बासी सूखी रोटियाँ भी नियामत थीं। उनका भी सदा मिलना कठिन होता था। इसी को सच्चा त्याग और तपस्या कहें तो क्या अनुचित है। देशोद्धार के लिये की गई इस तपस्या का ही परिणाम है, कि वह आज वे मरने के बाद पूजे जा रहे हैं।

दल का पुनर्गठन—

काकोरी-काण्ड में उत्तर प्रदेश के अधिकांश क्रान्तिकारी कार्यकर्त्ताओं के पकड़ लिए जाने और दल का संगठन छिन्न-भिन्न हो जाने पर, उससे निराश न हो आजाद ने फिर किस अदम्य साहस और बूझ-बूझ से दल को फिर से संगठित करना आरम्भ कर दिया, यह उनके नेतृत्व का एक उत्कृष्ट उदाहरण था। झाँसी में सातार नदी के तट पर हनुमान जी के मन्दिर में रहते हुये ही, जब कि देश में सैकड़ों गुप्तचर उनको खोजते फिर रहे थे, उन्होंने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चुने हुए सदस्यों को अपने पास बुलाना और जंगल में निशाने बाजी की शिक्षा देना आरम्भ कर दिया था । इस भू-भाग में दतिया, खनियाधाना, ओरछा आदि देशी रियासतें थीं, जहाँ कानून और शासन-व्यवस्था का अधिक जोर न था । वहीं आजाद ने शस्त्र-शिक्षा के कई केन्द्र खोल रखे थे । इनमें झाँसी तथा ग्वालियर के सदस्य तो आते ही थे, कभी-कभी कानपुर के और पंजाब के कार्यकर्त्ता भी आ जाते थे, आगरे में बने बमों की परीक्षा भी यहीं के जंगलों में भगतसिंह ने स्वयं की थी ।

जब काकोरी-केस का फैसला हो चुका और पुलिस की दौड़-धूप कुछ कम हुई तो आजाद कानपुर तथा उत्तर प्रदेश के अन्य नगरों में भी जाकर नये-पुराने कार्यकर्त्ताओं से सम्पर्क स्थापित करने लगे । वे इसके लिये कैसी सावधानी से काम लेते थे और संगठन को सुदृढ़ बनाते थे, इसका एक संस्मरण सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी श्री शिव वर्मा ने अपनी पुस्तक "संस्मृतियाँ" में लिखा है–

"एक दिन जब सुरेन्द्र पाण्डे ने आकर धीरे से मेरे कान में कहा कि नम्बर दो (चन्द्रशेखर आजाद का उस समय का सांकेतिक नाम यही था) आगये हैं और आज रात तुम्हें उनसे मिलना है, तो मेरे सारे शरीर में बिजली-सी दौड़ गई । दूसरों से आजाद के बारे में जो कुछ सुना था, उसके सहारे कल्पना के सहयोग से दिमाग में मैंने उनकी एक तसवीर बनाली थी । सुरेन्द्र की बात से वह तसवीर चलती-फिरती-सी लगने लगी ।

"विजय और सुरेन्द्र उस समय तक सी० आई० डी० की नजरों पर चढ़ चुके थे और उनकी गतिविधि पर पुलिस की कड़ी निगाह थी । लेकिन मैं अभी उस अभिशाप से बरी था । फिर भी उस दिन शाम से ही मैंने अपने चारों ओर निगाह रखनी शुरू करदी कि कहीं ऐन मौके पर कोई पीछा न करलें । गर्मियों के दिन थे । निश्चित समय से काफी पहले ही कालेज से निकल पड़ा और यह जानने के लिये कि कोई पीछा तो नहीं कर रहा है मैंने इधर-उधर के काफी चक्कर लगाये, कई पार्कों में बैठा, सुनसान से गुजरा और जब यकीन होगया कि मैं अकेला ही हूँ तो रात के लगभग नौ बजे श्रीराधामोहन गोकुल जी के मकान पर जाकर दरबाजा खटखटाया । राधा-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मोहन जी ने दरबाजा खोला और बिन कुछ कहे ऊपर छत की ओर इशारा कर दिया। वहाँ खुली छत पर फैले चाँद के रुपहले प्रकाश में एक व्यक्ति चटाई पर उघारे वदन पाल्थी लगाये अकेला बैठा हम लोगों की प्रतीक्षा कर रहा था। सांवला रंग, गठा हुआ तगड़ा जिस्म, औसत लम्बाई से कुछ नाटा कद, छोटी तेज चुभती हुई आँखें, चेहरे पर चेचक के गहरे दाग। यह काकोरी केस के फरार अभियुक्त चन्द्रशेखर आजाद थे, जिनका नाम ब्रिटिश साम्राज्य-शाही के लिये आतंक बन चुका था और जिनकी गर्दन के इन्तजार में अँगरेजी सरकार के जल्लाद का फन्दा बेकरार था। उनके दाहने घुटने के पास जिस्म से सटा हुआ उनका रिवाल्वर पड़ा था।

"मुझे सामने देखकर पास ही पड़ी दूसरी चटाई की ओर इशारा करते हुये 'आओ भाई' कह कर उन्होंने मेरा स्वागत किया, फिर प्रश्नवाचक स्वर में पूछा "प्रभात ?" उत्तर में संक्षेप-सा "जी" कह कर मैं पास वाली चटाई पर बैठ गया। "विजय और पाण्डे भी आ रहे होंगे, तभी बात करेंगे।" फिर कुछ ठहर कर स्वयं ही बोले—"विजय से मैं तुम्हारे काम के सम्बन्ध में सुन चुका हूँ। बिखरे सूत्रों को फिर से जोड़ कर नये सिरे से नया संगठन खड़ा करने का जो प्रयास तुम लोगों ने शुरू किया है, इससे लगता है कि अभी सब कुछ गया नहीं है और शीघ्र ही शायद हम लोग फिर से कुछ करने में समर्थ हो सकें।" आजाद का वाक्य पूरा होते-होते विजय और पाण्डे भी आ गये।"

इस तरह आजाद ने पुराने और नये बिखरे सूत्रों को इकट्ठा करके एक नया संगठन तैयार करने का प्रयत्न आरम्भ कर दिया और कुछ ही दिनों में झांसी तथा कानपुर ही नहीं ग्वालियर, सहारनपुर, देहरादून, इलाहाबाद, दिल्ली आदि सभी नगरों में दल की शाखायें स्थापित करने की व्यवस्था की जाने लगी। इतना ही नहीं दूरवर्ती अजमेर, जयपुर, पूना आदि से भी सम्बन्ध हो गया। इस प्रकार उन्होंने दिखला दिया कि वे युद्ध में ही बढ़े-चढ़े नहीं हैं एक कुशल संगठनकर्ता भी हैं।

कुछ ही समय पश्चात् उनका सम्बन्ध भगतसिंह और सुखदेव आदि लाहौर के क्रांतिदल वालों से भी होगया। आगरा में एक 'केन्द्रीय समिति का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कार्यालय' खोला गया, जहाँ विभिन्न स्थानों के सदस्यों को इकट्ठा करके दल की ट्रेनिंग दी जाने लगी। वहाँ की परिस्थितियों का जो वर्णन श्री भगवान दास माहौर ने किया है, वह पढ़ने योग्य है—

"सन् १९२८ में मैं ग्वालियर में विक्टोरिया कालेज में बी० ए० का विद्यार्थी था और वहीं होस्टल में रहता था। काकोरी केस के बाद पुनः संगठित क्रांतिकारी संगठन के प्रमुख सदस्यों में से उस समय तक मेरा परिचय केवल श्री चन्द्रशेखर आजाद, कुन्दनलाल, विजयकुमार सिन्हा और सुरेन्द्रनाथ पाण्डेय से ही था। एक रोज अचानक भाई विश्वनाथ गंगाधर वैशम्पायन मेरे पास होस्टल में आये और मुझे अपने साथ आगरा ले गये। यहीं मुहल्ला नूरी दर्वाजामें एक मकान में दुमंजलेमें क्रांतिकारीदल की 'छावनी' पड़ी हुई थी। भाई विश्वनाथ के साथ मैं उक्त कमरे के द्वार पर पहुँचा तो निश्चित संकेत करने के बाद किसी ने भीतर से टार्च जलाकर हम दोनों को सिर से पैर तक देखा और फिर साँकल खोलकर भीतर आने दिया। कमरे में घुसते ही सबसे पहले मेरा सामना एक अच्छे बड़े रिवाल्वर की नली से हुआ। उससे नजर हटा कर जो आगे देखा तो एक अच्छे बलिष्ठ और सुन्दर नौजवान सावधान और सतेज आँखों को अपनी ओर घूरता पाया। यह नौजवान ही भगतसिंह थे, जो इस समय रात के लगभग ग्यारह बजे शिविर के पहरे पर अपनी ड्यूटी दे रहे थे। कमरे में कुछ नौजवान जो देखने में विद्यार्थी जैसे ही लगते थे, जमीन पर धोती और अखवार बिछाये एक कतार में पड़े सो रहे थे। हमारे आने से जो आहट हुई उससे दो एक की आँख खुल गई। एक ने उठकर मिट्टी के तेल की कुप्पी के मन्द प्रकाश में हमें घूरा और इसके पहले कि मैं उसे पहचान पाऊँ उसने मुझे पहचान कर होस्टल के विद्यार्थियों की तरह निहायत बेतकुल्लफाना ढंग से पादप्रहार करके और अपनी भावी पत्नी का एक निकट सम्बन्धी घोषित करते हुए मेरा स्वागत किया। इससे मुझे भाई विजयकुमार सिन्हा को पहचानने में आसानी हुई और फिर मैंने भी उत्तर में उनके सत्कार का समुचित उत्तर दिया।"

क्रांतिकारियों की 'छावनी' का यह वर्णन करने के पश्चात् माहौर जी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ने दूसरे दिन का हाल लिखते हुए बतलाया है– "इसके बाद नहाने का कार्य-क्रम शुरू हुआ। नहाने के पहले भगतसिंह ने आजाद की पीठ में तेल मला और आजाद ने भगतसिंह की। धीरे-धीरे दोनों एक दूसरे के हाथ मलने लगे। फिर जोर होने लगा तो आपस में हुँ-हाँ भी होने लगी। धीरे-धीरे यह नौबत आई कि दोनों भिड़ गये और भगतसिंह ने आजाद को अपने दोनों हाथों से उठाकर फर्श पर धर पटका। मैं आजाद की ताकत का लोहा मानता था और यह भी समझता था कि वे अपनी पूरी ताकत अभी नहीं लगा रहे हैं। फिर भी भगतसिंह के बल की धाक मेरे मन पर जम गई।"

क्रांतिकारियों की फाकामस्ती —

ये तरुण क्रांतिकारी, जो संसार के सबसे अधिक प्रतापशाली और प्रभावशाली ब्रिटिश-साम्राज्य के अधिकारियों से टक्कर लेने को खड़े हुये थे, कितने साधनहीन थे, इसको जानकर पाठकों को आश्चर्य हुये बिना न रहेगा। आगरे के जीवन के विषय में वैशम्पायन ने लिखा है–'एक बार आजाद, भगत-सिंह बगैरह लाहौर में थे। उस समय उस मकान में मैं, विजय तथा जयदेव ही रह गये थे। घर में बिजली नहीं थी इस लिये लालटेन से प्रकाश की व्यवस्था थी। कमरे में केवल एक दर्वाजा था जो सदा बन्द रहता था। जो भी बाहर से आता दरवाजे पर दस्तक देता। एक व्यक्ति जाकर दरबाजा खोलता और बाकी सचेत हो जाते। अपना साथी आया देख हथियार पर से हाथ हट जाते। आर्थिक संकट इतना था कि भूख लगने पर सोचा जाता कि पास में कितना पैसा है और कम से कम कितने में गुजारा हो सकता है। जयदेव ने बताया कि इस घर एक बार तो तीन दिन तक केवल एक-एक कप चाय पर ही गुजारा करना पड़ा था। मैं जिन दिनों था तब एक बार खाना बनता था। दो साथी बनाते, दो खाने को बैठते। हर खाने वाले का यही प्रयत्न रहता था कि वह कम खाकर बाद में खाने वालों के लिये बाकी छोड़ दे। कई बार आजाद तथा भगतसिंह 'भूख नहीं है' कह कर भूखे ही रह जाते।

"यही स्थिति काकोरी के समय भी थी। श्री शचीन्द्रनाथ बख्शी ने ऐसी ही एक घटना का वर्णन करते हुये बताया था कि एक बार सम्भवत:

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बनारस या शाहजहाँपुर में काफी सदस्य एकत्रित थे। उन दिनों लोग खिचड़ी पर ही गुजारा करते थे। खिचड़ी बन चुकी थी, सभी सदस्य बैठे खा रहे थे और सबको परोसने वाले थे कुन्दनलाल। सब खाना खा चुके। कुन्दनलाल वैसे ही बर्तन मांजने लगे। उन्हें बर्तन मलते देख आजाद और बख्शी बाबू भी सहायता के लिये आ गये। बख्शी बाबू ने सहज ही कुन्दनलाल से पूछा-"तुमने भोजन किया या नहीं ?' इस पर कुन्दनलाल चुप ही रहे। बहुत पूछने पर उन्होंने बताया कि खाना बचा ही नहीं था। इस पर सभी को दुःख हुआ और कुन्दनलाल के लिये तुरन्त व्यवस्था की गई। आगरे में अनेक बार जितना आटा होता उसकी ही रोटियां बनाई जाती और दाल की देगची बीच में रख कर सभी चारों ओर बैठकर एक साथ खाते। श्री माहौर ने इसे 'भक्षण-चक्र' के नाम से सम्बोधित किया है।" बात यह थी कि इन लोगों के पास बर्तन थे ही नहीं, इसी तरह हाथ में रोटी लेकर खा लेते थे।

इन सुशिक्षित और अच्छे घरों के नवयुवकों ने देश की खातिर केवल अपने जीवन को ही खतरे में नहीं डाला वरन् खाने-पीने तक का इतना कष्ट उठाया, यह एक ऐसी बात है कि जिससे आज भी सभी सार्वजनिक कार्यकर्ता प्रेरणा ग्रहण कर सकते हैं। सेवा के क्षेत्र में वही व्यक्ति कुछ ठोस कार्य कर सकता है जो सब तरह के शौकों और आराम का खयाल छोड़ कर सादगी का जीवन बिता सकता है। अन्यथा जो लोग ऐसे कार्यों में भाग लेकर भी भोग विलास की भावना रखते हैं वे सेवा और परोपकार का कार्य तो दूर रहा, उल्टा अपने और दूसरों के पतन तथा संकट के कारण सिद्ध होते हैं। क्रांतिकारी दल में ही कैलाशपति का उदाहरण इस तथ्य को स्पष्ट कर देता है। वह कहता था कि एक क्रांतिकारी के लिये चार-पाँच सौ रुपया मासिक खर्च को चाहिये। उसने अपने ही एक साथी की पत्नी को फँसा लिया था और उसके लिये पचास खद्दर की साड़ियाँ और ब्लाउज लाकर रख दिये थे। पकड़े जाने पर कैलाशपति सब से पहले मुखबिर बना। उच्च आदर्शों से अनभिज्ञ और भोग बिलास की अभिलाषा रखने वाले ऐसे महान कार्यों में अगर भाग लेते हैं तो ऐसा ही नतीजा होता है। सार्वजनिक क्षेत्र में सेवा करने वालों को त्यागवृत्ति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और कष्ट सहन की शिक्षा दी जानी अनिवार्य है । आजाद इसके प्रत्यक्ष उदाहरण थे ।

साथियों की सुरक्षा—

आजाद को अपने साथियों की सुरक्षा का सदा पूरा ध्यान रहता था, चाहे उनको अपना कार्यक्रम कितनी ही बार क्यों न बदलना पड़े और चाहे इसके कारण कुछ लोग नाराज भी क्यों न हो जायें । इसी ख्याल से वे प्रायः सभी "एक्शनों" (डकैती, मार-काट आदि) में स्वयं भी उपस्थित रहते थे । अनेक सदस्य उनका महत्त्व और अनिवार्यता समझ कर उनको छोटी-मोटी घटनाओं से पृथक रखने की चेष्टा करते, पर आजाद जब तक स्वयं उसमें सम्मिलित न होते उन्हें संतोष ही नहीं होता । एक बार बहुत अधिक आर्थिक तंगी के कारण एक मंदिर पर डकैती करने का निश्चय किया गया । उसमें भाग लेने को शिव वर्मा, राजगुरु और भगवान दास को चुना गया । इस पर आजाद नाराज होकर चुप हो गये । उन्हें यही शंका हो रही थी कि कहीं कुछ उल्टा-सीधा न हो जाय । शिव वर्मा ने इस बात को समझ कर उनसे भी साथ चलने के लिये कहा । इसका परिणाम यह हुआ कि सब लोग सकुशल वापस आ सके । यदि आजाद न होते तो इस बात की पूरी संभावना थी कि दो-चार व्यक्ति मारे जाते और हाथ भी कुछ न लगता ।

आजाद को क्रांतिकारी दल की सम्मान रक्षा का भी सदा ध्यान रहता था, और वे कोई ऐसा काम न करना चाहते थे जिससे दल की बदनामी हो । यही कारण था कि सबसे पहली डकैती में ही जब वे रामप्रसाद बिस्मिल के साथ किसी गाँव में गये थे तो दो स्त्रियों ने उनसे पिस्तौल ही छीन ली और वे स्त्रियों पर हाथ न उठाने के सिद्धान्त के कारण उनका कुछ न कर सके । इसी प्रकार बुन्देलखण्ड में रहते समय एक घटना हुई जिसमें आजाद ने सिद्धान्त की रक्षा के लिये आर्थिक लाभ के प्रस्ताब को ठुकरा दिया । इसका वर्णन करते हुये वैशम्पायन ने लिखा है—

बुन्देलखण्ड की एक रियासत के किसी सरदार का परिचय आजाद से कराया गया । उन्होंने प्रस्ताव किया कि आजाद वहाँ के राजा को मारने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में सरदार को सहयोग दें । इस कार्य के लिये वे दल को काफी आर्थिक सहायता दे सकेंगे । दल के एक सदस्य इसके पक्ष में थे । उनकी दलील यह थी कि "आखिर डकैती के अवसर पर भी अनिवार्य परिस्थिति में हम को हत्या करनी पड़ती है, तो इस हत्या में क्या दोष है ?" आजाद ने एक दम इनकार न करके उनको मीठे शब्दों में समझाया—"ऐसा करना अनुचित है । मजबूरी में किसी को मारना और बात है और जान बूझ कर हत्या करनी दूसरी बात । हमारा क्रांतिकारियों का दल है, हत्यारों का नहीं । पास में पैसे हों या न हों, हम भूखे रह कर फाँसी पर भले ही लटक जायँ, पर पैसे के लिये ऐसा घृणित कार्य नहीं कर सकते । यह सब हमारे सिद्धान्तों के प्रतिकूल है ।"

वैशम्पायन से ही सम्बन्धित दूसरी घटना इस प्रकार है कि "एक बार झाँसी के ही एक सदस्य ने, जो मुझसे अवस्था और अनुभव में बड़े थे, मेरे सामने एक प्रस्ताव रखा कि एक व्यक्ति के साथ डकैती में चला जाऊँ । वह व्यक्ति नकली सिक्के बनाता था और वह जिस प्रकार का काम करने जा रहा था, वह डकैती नहीं चोरी थी । उसमें सोने के जेबर हाथ लगने की आशा थी । उन दिनों झाँसी में आजाद, भगवानदास या सदाशिव कोई नहीं थे, जिनसे मैं परामर्श करता । मैंने सोचा, पार्टी को पैसा मिल ही जायगा, इस लिये इस कार्य के करने में क्या हानि है ? मैं उस व्यक्ति के साथ जाने को तैयार हो गया । दो दिन बाद जाने का निश्चय हुआ । इसी बीच आजाद झाँसी आ गये । उनका नियम था कि आते ही सब लोगों से मिल कर हाल-चाल पूछ लेते थे । बातों के सिलसिलें में मैंने उनको इस "एक्शन" की चर्चा की और उसमें जाने के लिय सहमत होने की बात बताई । वे बड़े धैर्य से सारी बात सुनते रहे, फिर हँसकर बोले—"आपको किसने यह सलाह दी ?" जब मैंने नाम बताया तो रुष्ट होकर बोले—'उस मूर्ख को मैं देखता हूँ । और खबरदार, अपने आप जो ऐसा मूर्खतापूर्ण कार्य किया तो । वहाँ पकड़े गये तो चोर कहलाओगे, दूसरे जेबर मिल भी गये तो उन्हें कहाँ बेचते फिरोगे ? और हम लोग क्या चोर उचक्के हैं ? इक्के-सिक्के डालना हमारा काम नहीं ।" बाद में उन सलाह देने वाले सज्जन की भी जोरदार खबर ली गई । वे मुझसे बहुत बिगड़े कि मैंने आजाद को यह सब क्यों बताया ? मैंने स्पष्ट कह दिया कि एक नेता के नाते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मुझे उन्हें सारी बातें बताना आवश्यक था। और ऐसे कामों में उनकी सलाह और नेतृत्व तो अत्यन्त आवश्यक था ही।"

खतरे के समय सबसे आगे—

इस सम्बन्ध में अपने अनुभव में आई एक घटना का वर्णन श्री शिव वर्मा ने किया है, जिससे अपने साथियों के प्रति आजाद के अगाध स्नेह का पता चलता है। वे एक कट्टर और शक्ति का प्रदर्शन करने वाले अफसर की तरह अपने सहकारियों को आग में झोंकना नहीं चाहते थे, वरन् उनकी रक्षा के लिये सदैव अपना बलिदान करने को तैयार रहते थे। यह घटना असेम्बली बम काण्ड के बाद की है। उस दिन शिव वर्मा दो नई योजनाओं (एक्शन) का प्रस्ताव लेकर आजाद के पास झाँसी गये थे। उस दिन झांसी केन्द्र में सदस्यों का काफी जमघट था। झाँसी के तीन प्रमुख कार्यकर्त्ताओं के अतिरिक्त राजगुरु और कुन्दनलाल भी आगये थे। जब शिव वर्मा पहुंचे तो सबने घेर लिया और भगतसिंह तथा दत्त के समाचार पूछने लगे। कुछ देर बाद उन्होंने आजाद के सामने सहारनपुर केन्द्र में सोची गई दो योजनायें रखीं। एक देहरादून में शिकार खेलने के अवसर पर वायसराय पर बम फेंकने की और दूसरी दिल्ली से लाहौर ले जाते समय भगतसिंह और दत्त को छुड़ाने की। आजाद ने कैदियों को छुड़ाने की बात से तो सहमति प्रकट की, पर वायसराय पर बम फेंकने की योजना को बिल्कुल नामंजूर कर दिया। वे कहने लगे—"अब मैं अलग-अलग साथियों को एक्शन में नहीं झोंकूँगा। दल के सेनापति के नाते क्या मेरा यही काम है कि लगातार नये-नये साथी जमा करूँ, उनसे अपनापन बढ़ाऊँ, फिर योजना बनाकर उन्हें मौत के हवाले कर दूं ? अगर चलना होगा तो इस बार सब एक साथ चलेंगे।" आगे चलकर शिव वर्मा लिखते हैं—

"उसी दिन झुटपुटा होते ही कानपुर से सुरेन्द्र पाण्डे आ गये। वे काफी परेशान से लग रहे थे, उन्होंने बताया कि पुलिस को आजाद के झाँसी में होने का पता चल गया है और कानपुर का सी. आई. डी. सबइन्सपेक्टर शम्भूनाथ उनकी तलाश में झाँसी आया है। वे कानपुर से यही सूचना देने आये थे और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उन्होंने झांसी स्टेशन पर शम्भूनाथ को गाड़ी से उतरते देख लिया था। सुरेन्द्र को यह सूचना कानपुर सी. आई. डी. आफिस में काम करने वाले पार्टी के किसी हमदर्द से मिली थी। पाण्डे का यह भी अनुमान था कि सम्भवतः उसी रात झाँसी में विभिन्न स्थानों पर आजाद की तलाश में पुलिस छापे मारेगी।

"उस समय वैशम्पायन को छोड़कर मकान में दोपहर वाली पूरी मण्डली मौजूद थी। उस सूचना के बाद पूरा अंधेरा होने के पहले किसी के मकान से बाहर निकलने का अब कोई प्रश्न नहीं था।"

"जब रात का अंधेरा घना हो गया तो यह सवाल उठा कि कौन सबसे पहले बाहर निकले। इतने आदमियों के एक साथ निकलने से किसी को भी शक हो सकता था। हम चाहते थे कि हमारे रहते ही आजाद सही सलामत किसी सुरक्षित स्थान पर चले जायें। आजाद इसके लिए राजी न थे।

"मकान पर किसी भी समय पुलिस छापा मार सकती थी और जो जितनी देर तक वहाँ अटका रहेगा उसके लिए उतना ही अधिक खतरा भी होगा। इसलिए हम लोग जल्द से जल्द आजाद को वहां से हटा देना चाहते थे। उधर अन्य साथियों को छोड़कर केवल अपनी फिक्र करना आजाद के स्वभाव के विपरीत था। काफी देर तक इस मसले पर बहस होती रही, लेकिन आजाद पर हमारे तर्क, अनुनय-विनय, प्रार्थना आदि का कुछ भी असर न पड़ा।"

उनको अकेला छोड़कर बाकी लोग वहाँ से हटने को राजी न हुए तो उन्होंने अपना आखिरी ब्रह्मास्त्र फेंका—"दल के सेनापति के नाते मैं तुम चारों को आदेश देता हूं कि फौरन एक-एक करके मकान के बाहर हो जाओ।" उन्होंने सदाशिवराव मलकापुरकर और भगवानदास माहौर को, जो एक मानी में उनके दाहिने और बाँये हाथ थे, अपने पास रख लिया। बाकी लोगों में सबसे पहले मुझे निकलना था, फिर राजगुरु को, उसके बाद पाण्डे को, फिर कुन्दनलाल को। उनके फैसले से हम लोग काफी परेशान थे, लेकिन चलना तो था ही। आजाद भी उठकर खड़े हो गये। मैंने आँखें उठाकर उनकी ओर देखा। मेरी आँखें छलक आईं। राजगुरु भी अपने को सँभाल नहीं पाया। आजाद

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बोले "चिन्ता मत करो प्रभात, जीते जी कोई इस शरीर पर हाथ नहीं लगा सकेगा।" फिर कुछ रुककर बोले—"और ये दोनों तो मेरे पास हैं ही।"

"रास्ते भर हमें आजाद की चिन्ता लगी रही। बाद में पता चला कि हमारे निकलने के बाद दोनों साथियों के साथ आजाद भी सही सलामत बाहर हो गये। और उसी रात प्रातः अंधेरे में जब पुलिस ने दल-बल के साथ आकर वह मकान घेरा तो आजाद की जगह कुछ पुराने अखबार ही उनके हाथ लगे।"

यही कारण था कि आजाद के प्रमुख साथी उनके एक इशारे पर प्राण झोंकने को तैयार रहते थे और किसी प्रकार की 'गद्दारी' करने का विचार भी उनके मन में नहीं आता था। पर आज-कल 'नेता' का लक्षण यह हो गया है कि लच्छेदार भाषण देकर आराम कुर्सी पर लेटे रहें, और अपने अनुयायिओं से सेवा कराने की अभिलाषा रखें। ऐसे स्वार्थी लोगों में परस्पर कभी सच्चा अनुराग नहीं हो सकता और न वे किसी बड़े सार्वजनिक उद्देश्य की पूर्ति कर सकते हैं।

साण्डर्स कांड —

लाला लाजपतराय की मृत्यु का बदला लेने की योजना जब क्राँतिकारी दल ने बनाई तो उसमें आजाद का मुख्य हाथ था। लालाजी की मृत्यु का समाचार पाते ही वे स्वयं लाहौर पहुँच गये और भगतसिंह तथा सुखदेव के साथ मिलकर योजना के विभिन्न पहलुओं पर विचार करने लगे। पुलिस सुपरिण्टेण्डेन्ट पर गोली चलाने का काम भगतसिंह तथा राजगुरु को दिया गया था और उनको बचाकर वापस लाने भार आजाद ने अपने ऊपर लिया। इसलिए आजाद ने अपनी तैयारी लालाजी के मरते ही आरम्भ करदी और कहते हैं कि जिस समय लालाजी की अर्थी निकल रही थी उस समय आजाद और भगतसिंह "एअर पिस्टल" से निशाना साधने का अभ्यास कर रहे थे। आजाद ने इस 'एक्शन' की योजना बड़ी पूर्णता से बनाई थी और प्रत्येक को अपने-अपने कार्य को अच्छी तरह समझकर अभ्यास कर लेने का आदेश दिया था, जिससे किसी तरह की भूल की गुंजायश न रहे।

सत्रह दिसम्बर १९२८ को दोपहर के बाद जब वह बाहर निकले तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जयदेव को इशारा करने के लिए पुलिस दफ्तर की तरफ भेज दिया गया। कुछ देर पीछे राजगुरु पैदल तथा भगतसिंह और आजाद बाइसिकलों पर उसी तरफ रवाना हुए। साण्डर्स को मारने के बाद हेडकांस्टेबिल चनन सिंह, जो साण्डर्स का अर्दली था अपना कर्तव्यपालन करने के लिए भगतसिंह आदि के पीछे दौड़ा। आजाद यथासंभव किसी भारतवासी को मारना नहीं चाहते थे। उन्होंने चननसिंह को डाँटकर पीछे लौट जाने को कहा, पर जब वह गालियाँ देता तेजी से पीछे दौड़ता ही रहा तो उन्होंने एक गोली से उसका काम तमाम कर दिया। पर बाद में भी वे चननसिंह की प्रशंसा ही करते रहे। उन्होंने वैशम्पायन से इसकी चर्चा करते हुये कहा—"बच्चन ! एक हिन्दुस्तानी और एक अंग्रेज की निष्ठा का अन्तर देखो। फर्न (साण्डर्स हत्याकांड के समय उपस्थित एक अंग्रेज इन्सपेक्टर) को गोली की आवाज सुनते ही प्राणों का मोह होगया और चननसिंह ने अपने कर्त्तव्य के लिए गोली और मौत की परवाह न की। मैंने बहुत कोशिश की कि चननसिंह को गोली न मारना पड़े, पर जब कोई चारा ही न रहा तो मारना पड़ा।" इससे प्रकट होता है कि जिन लोगों ने आजाद का चित्रण केवल एक कठोर अनुशासनकर्ता या मार-काट करने वाले खूनी व्यक्ति के रूप में किया है; वे वास्तविकता से अनजान थे। आजाद मानवता में बड़ी श्रद्धा रखने वाले थे और अकारण मानव-रक्त बहाना निन्दनीय समझते थे। केवल राष्ट्रोद्धार के महान आदर्श के लिये ही वे ऐसा कोई काम करने को तैयार होते थे।

असेम्बली बम कांड—

यही बात असेम्बली बम-कांड के अवसर पर सामने आई। उस समय असेम्बली का अधिवेशन होते समय बम फेंकना ऐसा काम था जिसमें बहुसंख्यक व्यक्ति मारे जा सकते थे। इसलिये यह निश्चय कर लिया गया कि बम घातक न हों और उनको पूर्ण सावधानी से सब को बचा कर फेंका जाय। इस घटना के अवसर पर जो पर्चा असेम्बली भवन में फेंके गये थे उनमें भी "मानवता" की इस भावन को स्पष्ट कर दिया गया था—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

"हम मनुष्य के जीवन को पवित्र समझते हैं। हम ऐसे उज्ज्वल भविष्य में विश्वास रखते हैं जिसमें प्रत्येक व्यक्ति पूर्ण शान्ति और स्वतन्त्रता का उपभोग करेगा। हम मानव-रक्त बहाने के लिए अपनी विवशता पर दुःखी हैं। परन्तु क्रान्ति द्वारा सबको समान स्वतन्त्रता देने और मनुष्य के द्वारा मनुष्य का शोषण समाप्त कर देने के लिए क्रान्ति में कुछ व्यक्तियों का बलिदान अनिवार्य है।"

इस अवसर पर यह भी प्रकट हुआ कि आजाद अपने साथियों को कितना अधिक प्यार करते हैं। उन्होंने असेम्बली में बम फेंकने के पश्चात् भगतसिंह के वहाँ जानबूझ कर पकड़े जाने का लगातार विरोध किया था, पर जब अन्य सदस्यों ने इस पर जोर दिया और खासकर सुखदेव ने भगतसिंह पर आक्षेप भी किये, तब वे चुप रह गये। फिर भी उनको भगतसिंह की गिरफ्तारी चिन्ता का कारण ही बनी रही। इस सम्बन्ध में "अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद" में लिखा है—

"भगतसिंह को आजाद केवल पार्टी के एक सदस्य के नाते ही नहीं देखते थे, बल्कि अपने भाई की तरह, अपने परिवार के व्यक्ति की तरह मानते और अत्यधिक स्नेह रखते थे। असेम्बली बम-काण्ड में वे भगतसिंह को नहीं भेजना चाहते थे। वे यह तो मानते थे कि उसके जाने और अदालत में वक्तव्य देने से पार्टी को देश की राजनीति में बहुत बड़ा स्थान मिलेगा—इतना ही नहीं, वरन् विश्व के लोग जान जायेंगे कि भारतीय क्रान्तिकारी देश की स्वतन्त्रता के लिए बड़ी से बड़ी कुर्बानी दे रहे हैं। पर साथ ही वे यह भी अनुभव करते थे कि पार्टी को इससे बहुत बड़ा धक्का भी लगेगा।" वे कहा करते थे कि "काकोरी के बाद संगठन कार्य में जो साथी मिले उनमें भगतसिंह एक हीरा था।" जब हम देखते हैं कि आजकल राजनीति में भाग लेने वाले परस्पर प्रायः प्रतिद्वन्दिता का भाव ही रखते हैं और एक ही पार्टी में भी सत्ता के लिए बड़ी लागडांट होती रहती है, तब चन्द्रशेखर और भगतसिंह का यह भ्रातृभाव हमारे लिए एक श्रेष्ठ आदर्श सिद्ध हो सकता है।

उनको भगतसिंह और अपने अन्य साथियों से कितना प्रेम था इसका एक उदाहरण "यश की धरोहर" में मिलता है—"जब भगतसिंह और दत्त

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दिल्ली की असेम्बली में बम फेंककर गिरफ्तार हो गये तो दो-चार दिन बाद साथी शिव वर्मा उन दोनों के फोटो लेकर झांसी आये। शिव वर्मा ने बड़ी भावुकता से सुनाया कि किस प्रकार वे पिस्तौल की नोक पर, अपने आपको खतरे में डालकर, फोटोग्राफर के यहाँ से ये चित्र लाये हैं। हम सभी भावुकतावश अपनी भीगी आँखों को पोंछ रहे थे। उस समय आजाद बिल्कुल "स्थित प्रज्ञ" की तरह अविचलित रहे। पर कुछ देर बाद वे अकेले में बैठे कुछ सोच रहे थे, तो मैंने देखा कि उनकी आँखों में आँसू हैं। मैं उनके पास जाकर सहानुभूति की बातें करने लगा तो आजाद बोले—"मुझे इसका दुःख नहीं है कैलाश ! कि भगतसिंह और दत्त चले गये। वह तो आगे-पीछे पकड़े जाकर या गोली खाकर हम सभीको जाना है। भगतसिंह को तो फाँसी होगी ही, पर उसको फाँसी होने से पहले हमको भी कुछ कर दिखाना है।"

आजाद का बौद्धिक विकास—

यद्यपि अपने दल में आजाद सबसे कम पढ़े-लिखे थे, तो भी बौद्धिक विकास की दृष्टि से वे किसी से कम न थे। हिन्दी के समाचार-पत्रों को नियमित रूप से ध्यानपूर्वक पढ़ते रहना उनका स्वभाव हो गया था। अंगरेजी के पत्रों और पुस्तकों को भी वे किसी साथी से पढ़वाकर सुनते समझते रहते थे। इससे उनका सामान्य ज्ञान बहुत से लोगों से बढ़ा-चढ़ा था। इस तथ्य का विवेचन करते हुए श्री भगवानदास माहौर ने लिखा है—

"आजाद के साथियों में, उनके नेतृत्व में काम करने वालों में से शायद ही किसी को उनसे कम स्कूली शिक्षा मिली होगी। शायद ही कोई उनसे अधिक गरीबी की दशा में उत्पन्न हुआ होगा। उनके साथ उनके पिता, भाई या अन्य किसी सम्बन्धी की देशभक्ति, त्याग-तपस्या, वीरता या अन्य किसी प्रकार के बड़प्पन की छाया भी नहीं लगी हुई थी। अमर शहीद भगतसिंह आदि अपने साथियों में उन्होंने नेता का पद, पुस्तकीय ज्ञान के बल पर नहीं, वरन् अपनी व्यावहारिक सूझ-बूझ, अदम्य साहस और सर्वोपरि अपने साथियों की सुख-सुविधा की हार्दिक चिन्ता रखकर ही पाया था। अपने साथियों और सम्पर्क में आने वाले लोगों के जीवन में केवल एक राजनीतिक मूल्य के रूप में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ही नहीं, एक व्यक्तिगत भाव-मूल्य के रूप में घर कर लेने के अपने गुण में ही आजाद की सफलता निहित थी। उनके अकृत्रिम, स्नेहपूर्ण व्यवहार ने ही उन्हें साथियों का प्रिय नेता बना दिया था और उनके हृदय में ऐसा विश्वास उत्पन्न करा दिया था कि वे आजाद के संकेत मात्र पर प्राण देने को तैयार रहा करते थे। दल में आजाद के नेतृत्व को स्वीकार करने के सम्बन्ध में कभी कोई झंझट या झगड़ा नहीं हुआ।"

श्री अर्जुन अरोड़ा ने आगरा में "श्री राधामोहन गोकुल जी स्मृति समारोह" के अवसर पर कहा था कि "चन्द्रशेखर आजाद ने मुझे दो पुस्तकें दीं—"ए. बी. सी. आफ कम्यूनिज्म" और "सोवियत रूस की पंचवर्षीय योजना"। उस समय एक बम के धड़ाके से हाथ घायल हो जाने के कारण मैं फरार था। आजाद ने तब कहा कि तुम अब पुलिस में हाजिर हो जाओ, मुकदमा चलेगा, सफाई दी जायगी, ३–४ वर्ष की सजा हो जायगी। उसे काट कर मजदूरों में काम करना। तुम्हारे पास तो अभी लम्बी जिन्दगी है।"

इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि मनुष्य की महानता बहुत कुछ उसके हार्दिक भावों, सच्चे प्रेम और बिना माँगे सहयोग पर ही आधार रखती है। खेद का विषय है कि आजकल राजनीतिक या सार्वजनिक क्षेत्र में ऐसे व्यक्तित्व का बहुत अभाव हो गया है। इस समय तो गुटबन्दी ही नहीं "दल-बदल" तक धूमधाम से चल रही है। स्वार्थपरता की लहर इतने वेग पर है कि किसी की आन्तरिक सचाई पर विश्वास करना कठिन हो गया है। इस परिस्थिति को देखते हुए घोर अभाव में पला हुआ, अपने त्याग, तपस्या और प्रेम के आधार पर महानता को प्राप्त करने वाला यह युवक-नेता सदैव हमारी श्रद्धा का पात्र बना रहेगा।

अन्धविश्वास और पाखंड से दूर—

अपनी इसी ज्ञान-ग्रहण करने की वृत्ति के कारण आजाद के विचार काफी प्रगतिशील और परिष्कृत बन गये थे, और वे अपने समाज में फैले हुए अन्धविश्वास तथा रूढ़िवादिता के दोषों से बहुत कुछ ऊपर उठ गये थे। एक बार ग्वालियर के विक्टोरिया कालेज में जब वे भगवान दास से मिलने गये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तो वहां के कुछ विद्यार्थियों ने रात के समय उनको 'भूत का करिश्मा, दिखला कर भयभीत करना चाहा। पहले तो आजाद हँसते रहे और कहा कि यह गुन्डों की शरारत है। पर जब विद्यार्थी उनको सचमुच भूत होने का विश्वास दिलाने लगे तो वे तुरन्त उठ खड़े हुये कि "चल मैं देखूं कि कैसे भूत हैं !" लड़के उनको डराते और रोकते रहे पर उन्होंने पास जाकर उन 'भूतों' पर ऐसी ढेलेबाजी की कि वे सब भागते ही नजर आये। हार कर लड़कों ने अपनी चालाकी की बात स्वीकार करली और वे आजाद के भक्त और प्रशंसक बन गये।

इसी प्रकार एकबार झाँसी में दल के अर्थ-संकट को दूर करने के लिये मास्टर रुद्रनारायण ने यह सुझाव दिया कि ओरछा में बेतवा नदी के किनारे एक लक्ष्मीजी का पुराना मंदिर है। लोग कहते हैं कि वहां एक स्थान पर धन गढ़ा है और उस पर एक साँप बैठा है जो धन को छूने नहीं देता। आजाद ने हँसकर कहा—"अजी धन तो क्या होगा पर मैं यह देखना चाहता हूँ कि वह साँप धन को छूने कैसे नहीं देता ? यह भूत-प्रेत, भूमिया, सांप-वाप की बातें ढपोरसंखों की हैं।" मास्टर ने कहा-"तो फिर चलकर देख क्यों नहीं लेते ?" बस एक दिन शाम के समय दो व्यक्तियों के साथ वे मौके पर पहुंचे और रात भर खूब खुदाई की। पर नतीजा कुछ न निकला। सवेरा होने पर तीनों व्यक्ति इस विषय पर वाद-विवाद करते झाँसी लौट आये।

आजाद का अन्त —

इलाहाबाद के अलफ्रेड पार्क में आजाद ने किस प्रकार सच्चे वीरों की तरह मृत्यु का आलिङ्गन किया इसकी झाँकी तो हमने पुस्तक के आरम्भ में ही करादी है। पर उस घटना में एक बहुत बड़ा रहस्य यह निहित है कि आजाद के दल के कुछ व्यक्तियों ने ही विश्वासघात करके पुलिस को सूचना दी और एक महान देशभक्त की हत्या का कलंक अपने सर पर लिया। यह वह अवसर था जब दिल्ली-षड़यंत्र केस के मुखबिर कैलाशपति के बयान के आधार पर पुलिस चारों तरफ क्रांतिकारियों के पीछे पड़ गई थी और आजाद के साथी एक-एक करके पकड़े या मारे जा रहे थे। यद्यपि आजाद अब भी अपनी चिन्ता न करके साथियों के बचाव के लिये प्रयत्नशील थे, पर उनके ऊपर 'होनहार' की काली छाया पड़ने लग गई थी। अपने ही साथियों के विश्वास-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

घात और नीचतापूर्ण कृत्यों ये वे दुःखी हो गये थे और उन्होंने दल को भंग कर दिया था। इन्हीं गद्दारों की सहायता से पुलिस आजाद को फँसाने का ताना-बाना पूर रही थी। आजाद को पकड़ने का भार पुलिस इन्सपेक्टर शंभूनाथ को दिया गया था, जिसका वीरभद्र के साथ घनिष्ठ परिचय ही नहीं था वरन् घरेलू सम्बन्ध भी बतलाया जाता था। एक बात यह भी थी कि जिन सदस्यों के प्रति आजाद ने 'भृष्टाचार' या 'दुराचार' के लिये अनुशासन की कार्यवाही की थी वे उनके शत्रु बन गये थे और ऊपर से मिले रह कर भीतर ही भीतर उनके नाश की योजनाओं में भाग ले रहे थे।

यह एक ऐसा गोपनीय और विरक्ति-कारक विषय है जिसका अधिक विस्तार करना हमें पसन्द नहीं। दूसरी बात यह कि हमारे पास उसका कोई विश्वस्त प्रमाण या विवरण भी नहीं हैं, यद्यपि आजाद की शहादत के समय इन पंक्तियों का लेखक इलाहाबाद में ही था और उसी चाँद प्रेस में काम कर रहा था जिससे आजाद और उसके साथियों का सम्बन्ध था और जहां सुखदेव राज नौकरी करता था। मैंने उस समय जनता में फैली बहुत-सी अफवाहें सुनीं जिनमें से एक यह भी थी कि "क्राँतिकारियों का कुछ रुपया चाँद प्रेस के मालिक रामरखसिंह सहगल के पास जमा था। जब आजाद उसे माँगने आये तो उन्हीं ने गुप्त रूप से पुलिस को सूचना दे दी।" पर क्रांतिकारी दल के सब काम ऐसे गुप्त होते थे कि किसी अन्य व्यक्ति के लिये उनकी असलियत समझ सकना सम्भव न था। इस लिये हम अलफ्रेड पार्क की घटना के लिये क्राँतिकारी दल के प्रमुख सदस्यों के वक्तव्यों के आधार पर ही कुछ अनुमान लगा सकते हैं।

आजाद और पुलिस के संघर्ष के सबसे अधिक प्रत्यक्षदर्शी गवाह सुखदेव राज हैं, जो आक्रमण के समय तक उनके साथ बैठे बातें कर रहे थे और जिन्होंने दो-चार मिनट लड़ने में भाग भी लिया। उनका कहना है कि जब हम पार्क में बातें कर रहे थे, तो आजाद ने एकाएक कहा कि "वह देखो सामने सड़क पर वीरभद्र जा रहा है, शायद उसने हमको देखा नहीं।" वीरभद्र भी क्रांति-कारी दल और उसकी केन्द्रीय समिति का भी सदस्य था, पर इन दिनों आजाद का विरोधी बन गया था। इस सम्बन्ध में सुखदेव राज ने लिखा है— "वीरभद्र को यशपाल द्वारा अपने प्राणदण्ड की सूचना मिल गई थी, इसलिए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भैया (आजाद) और दल के विरुद्ध वह विद्रोही हो गया था। अंग्रेजों की पुलिस से उसके गठबन्धन की बात अब किसी से छिपी नहीं थी। सत्याग्रह के के सिलसिले में ही श्री रामचन्द्र मुसद्दी भी वीरभद्र के साथ फैजाबाद जेल में थे। उनका कथन है कि मेरा यह दृढ़ मत है और मेरे पास प्रमाण हैं कि वीरभद्र ही आजाद की शहादत के लिए जिम्मेदार है।"

आजाद के परम विश्वासपात्र श्री वैशम्पायन ने लिखा है "वीरभद्र तिवारी आजाद की शहादत के दिन इलाहाबाद में ही था। वीरभद्र उत्तर प्रदेश में, विशेषकर कानपुर में क्रांतिकारी दल का कोई ऐसा 'एक्शन' नहीं होने देना चाहता था जिससे पुलिस सतर्क हो उससे उत्तर माँगती, क्योंकि वह पुलिस का मुखबिर भी था। इसलिये आजाद जब उसे कानपुर के एक 'एक्शन' में ले जाना चाहते थे तो वह सत्याग्रह करके जेल चला गया। परन्तु कैलाशपति मुखबिर ने जब यह बताया कि वीरभद्र केन्द्रीय समिति का सदस्य था, तो सी० आई० डी० का नाटबावर उससे मिला और उसे धमकाया कि वह आजाद का पता बताये नहीं तो उसे फाँसी पर चढ़ा दिया जायगा।"

भगतसिंह के साथी और पुराने क्रांतिकारी श्री काशीराम ने जो इस समय पाण्डचेरी के अरविन्द आश्रम में रहते हैं, ६ अप्रेल १९६७ के साप्ताहिक "हिन्दुस्तान" में लिखा था "आजाद की शहादत का जिम्मेदार कौन ?" यह प्रश्न दर असल बहुत गम्भीर है। वीरभद्र तो इसकी एक क्षुद्र कड़ी मात्र है। असली आदमी तो वह जान पड़ता है जिसने इलाहाबाद में पार्टी का रुपया हजम किया और पुलिस को भी आजाद के सम्बन्ध में इत्तला दी।"

क्रांतिकारी इतिहास लेखक श्री मन्मथनाथ गुप्त लिखते हैं—"चन्द्रशेखर आजाद की शहादत के बाद यह तर्क-वितर्क चालू रहा कि वीरभद्र ने मुखबिरी करके उनको मरवाया। सभी क्रांतिकारियों ने उसे ही दोषी माना है। केवल यशपाल ने वीरभद्र को दोषमुक्त करने की चेष्टा की है। इस सम्बन्ध में यशपाल का वक्तव्य इस कारण विशेष अर्थ नहीं रखता कि यशपाल को मृत्युदण्ड से वीरभद्र ने बचाया था, इस कारण शायद वह वीरभद्र के एहसान का बदला दे रहे हो।"

इन सब वक्तव्यों को जान लेने के पश्चात् यदि कोई निष्पक्ष व्यक्ति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वीरभद्र को न्यूनाधिक दोषी ठहराये तो इसे अन्याय नहीं कहा जायगा। यह स्पष्ट ही है कि काकोरी-केस में पकड़े जाने के बाद से ही उसने क्रांतिकारियों तथा पुलिस दोनों से मिले रहने की नीति अपनाई और इस प्रकार हर तरह से लाभ उठाने की कोशिश करता रहा। इस दृष्टि-कोण से विचार करने पर हम सुखदेव राज के अन्तिम निष्कर्ष को अधिकाँश में सही मान सकते हैं —

"वीरभद्र जन्मजात विश्वासघाती था। वह न पार्टी के विश्वास पर खरा उतरा, न पुलिस के और न नारी (खोकी) के ही। हर जगह और हर हालत में वह अपना ही उल्लू सीधा करता रहा।"

अब इतने समय बाद यह विवाद उठाना एक प्रकार से असामयिक ही है कि आजाद को मरवाने में किस-किस का हाथ था और उनमें कौन प्रमुख और कौन गौण था? कुछ भी हो परिस्थितियों को देखते हुए वीरभद्र को उसी समय अन्य क्रांतिकारियों ने दोषी माना था और दो बार उसे गोली मारने की चेष्टा भी की गई थी। हम तो इतना ही कहेंगे कि आजाद जैसे भारतमाता के सपूत के साथ विश्वासघात करने वाला कोई भी हो, इस प्रकार के आचरण द्वारा उसने अपने मस्तक पर कलङ्क का अमिट टीका ही लगा लिया। ऐसा व्यक्ति सदा घृणा का पात्र रहेगा और लोक या परलोक कहीं भी सुखी नहीं रह सकेगा।

मृत्यु का अन्तिम दृश्य—

इस प्रकार चन्द्रशेखर आजाद ने शत्रु के दल-बल के साथ खुले तौर पर युद्ध करते हुए वीरगति पाई। वह समय घोर राजनीतिक अशांति का था। गाँधीजी का नमक सत्याग्रह चल रहा था और गिरफ्तारियां अथवा गोली चलना उन दिनों मामूली बात थी। काँग्रेस के प्रमुख नेता अहिंसात्मक आचरण की प्रतिज्ञा करने के कारण आजाद और भगतसिंह जैसे हिंसात्मक आन्दोलन वालों से सहयोग करने को तैयार न थे। यद्यपि चन्द्रशेखर आजाद ने स्वयं पं० जवाहर लाल नेहरू से भेंट करके भविष्य के लिए हिंसा का त्याग करने का विचार प्रकट किया था, जिसका वर्णन नेहरू जी की आत्मकथा में मिलता है, फिर भी आजाद की मृत्यु के दिन तक कांग्रेस और क्रांतिकारियों के रास्ते अलग-अलग ही थे। इसलिए जब इलाहाबाद के कुछ देशभक्तों के प्रयत्न से आजाद की चिता की राख और अस्थियों का जलूस निकाला गया तो काँग्रेस वालों में से केवल श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन और कमला नेहरू ने आगे बढ़कर उस कार्य में सहयोग देने का साहस किया। चन्द्रशेखर के अस्थि-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कलश का सम्मान करने की सभा पुरुषोत्तमदास पार्क में की गई, जिसमे सौभाग्यवश महान क्रांतिकारी शचीन्द्रनाथ सान्याल की धर्मपत्नी श्रीमती प्रतिमा भी उपस्थित हो गईं। उन्होंने सभा में कहा–"खुदीराम बोस की भस्मी को लोगों ने ताबीजों में भरकर अपने बच्चों को पहिनाया था ताकि उनके बच्चे भी खुदीराम की ही तरह बहादुर देशभक्त बनें। मैं उसी भावना से भाई आजाद की राख की चुटकी लेने आई हूं।"

भगतसिंह के सच्चे सहयोगी श्री भगवती चरण की धर्मपत्नी और स्वयं क्रान्तिकारी दल में रहकर शत्रुओं पर गोली चलाने वाली 'दुर्गाभावी' ने आजाद के अन्तिम समय का वर्णन करते हुए 'नर्मदा' के विशेष अंक में लिखा था–

"भैया (आजाद) सरल स्वभाव के थे। दाव-पेंच और कपट की बातों से उनका दम घुटता था। उस समय पूरे देश में एक संगठन था और उसके केन्द्र आजाद थे। काम के लिए हम सभी सच्चे और ईमानदार थे किन्तु साधारण वातावरण दूषित होने लग गया था। क्राँतिकारियों की संख्या बढ़ गई थी, पर हर तरह के व्यक्ति उसमें आने लगे थे और झगड़े-झंझट भी बढ़ रहे थे। भैया का जीवन इस प्रकार पैदा हुई समस्याओं से उलझने लगा, वे खिन्न और दुःखित रहने लगे। कोई ठोस काम हो न पा रहा था। समय ने भी इसमें योग दिया, मित्र ने उनके प्रति घात किया और वह कलाकार संसार से रूठ कर चला गया।"

श्री मन्मथनाथ ने ठीक ही लिखा है कि "शायद ही कोई अन्य क्रांतिकारी सात साल तक खतरनाक से खतरनाक कार्य करते (कराते ही नहीं) हुए रंगमंच पर रहे हों। तथ्य यह है उनके पाँव में उनके युग के उत्तर भारत के सारे क्रांतिकारियों के पैर आजाते हैं।"

"अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद" के लेखक के यह शब्द भी यथार्थ हैं कि 'आजाद जिस सिद्धान्त को लेकर क्रांतिकारी संघर्ष कर रहे थे, उसकी पूर्ति आज भी नहीं हुई है। वे समाजवादी शासन-व्यवस्था के पक्के समर्थक थे। उनके प्रति उचित श्रद्धांजलि तो यही होगी कि हम उनके स्वप्नको साकार करें।'

निस्सन्देह सच्चे क्रांतिकारियों के मनोभाव और सिद्धाँत ही उनके सर्वस्व होते हैं। उन्हीं की खातिर वे हँसते-हँसते अपना बलिदान कर देते हैं। चन्द्रशेखर आजाद का वास्तविक सम्मान हम तभी कर सकते हैं जब देश और समाज के कल्याण के लिये अपने को खपा दें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्कृष्ट व्यक्तियों के जीवन-चरित्र जन-मानस में मानवीय आदर्शवादिता के लिये आस्था उत्पन्न करते हैं। कहना न होगा कि यह निष्ठा ही लोक-मङ्गल का मूल आधार है। इसलिये आदर्शवादी व्यक्तियों की जीवन-गाथाओं की अधिकाधिक जानकारी जन कल्याण की दृष्टि से अतीव उपयोगी एवं आवश्यक मानी जाती रही है।

युग-निर्माण योजना द्वारा विचार-क्रान्ति के लिये जिस अभिनव साहित्य का निर्माण किया जा रहा है उसमें महामानवों के जीवन-चरितों की सीरीज को महत्व पूर्ण स्थान दिया गया है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं में से एक है। ऐसे-ऐसे अनेक जीवन-चरित्र छपे आ रहे हैं। हर महीने उनकी संख्या बढ़ जाती है। उनकी जानकारी पत्र लिखकर प्राप्त की जा सकती है। सभी जीवन-चरित्र इसी पुस्तक की भांति १२ पृष्ठों में हैं। उनका मूल्य ४० पैसा है।

मानवीय आदर्शों के प्रति आस्था रखने वाले प्रत्येक विचारशील व्यक्ति से यह आशा की जाती है कि वे इस साहित्य को स्वयम् पढ़ें और अपने परिवार तथा बालकों को भी इसे पढ़ायें सुनायें।

'युग-निर्माण योजना' मथुरा।

मूल्य ४० पैसा

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता :** जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक :** जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी :** जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक :** जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी :** जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक :** जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक :** जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक :** जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना :** जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org